

॥ योगसूत्रे ॥

प्रथमः समाधिपादः .

अथ योगानुशासनम् .. १..

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः .. २..

तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम् .. ३..

वृत्तिसारूप्यम् इतरत्र .. ४..

वृत्तयः पञ्चतयाः क्लिष्टा अक्लिष्टाः .. ५..

प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः .. ६..

प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि .. ७..

विपर्ययो मिथ्याज्ञानम् अतदुपप्रतिष्ठम् .. ८..

शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः .. ९..

अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिरिन्द्रा .. १०..

अनुभूतविषयासंप्रमोषः स्मृतिः .. ११..

अभ्यासवैराग्याभाङ्गं तन्निरोधः .. १२..

तत्र स्थितौ यत्नोऽभ्यासः .. १३..

स तु दीर्घकालनैरन्तरासत्कारासेवितो दृढभूमिः .. १४..

दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्य वशीकारसंज्ञा वैराग्यम्

.. १५..

तत्परं पुरुषख्यातेरगुणवैतृष्यम् .. १६..

वितरकविचारानन्दस्मितारूपानुगमाङ्गं संप्रज्ञातः .. १७..

विरामप्रत्ययाभ्यासपूरवः संस्कारशेषोऽयः .. १८..

भवप्रत्ययो विदेहप्रकृतिलयानाम् .. १९..

श्रद्धावीर्यास्मृतिसमाधिप्रज्ञापूरवक इतरेषाम् .. २०..

तीव्रसंवेगानाम् आसन्नः .. २१..

मृदुमध्याधिमात्रेऽत्राङ्गं ततोऽपि विशेषः .. २२..

ईश्वरप्रणिधानाद् वा .. २३..

ক্লেশকরমবিপাকাশযৈরপরামৃষ্টঃ পুরুষবিশেষ ঈশ্বরঃ

.. ২৪..

তত্র নিরতিশয়ং সরবত্ত্ববীজম্ .. ২৫..

স পুরেৰঘাম্ অপি গুরুঃ কালেনানবচ্ছেদাৎ .. ২৬..

তস্য বাচকঃ প্রণবঃ .. ২৭..

তত্ত্বপস্তদরথভাবনম্ .. ২৮..

ততঃ প্রত্যক্ষেতনাধিগমোপ্যন্তুরাযাভাৰশ্চ .. ২৯..

ৰযাধিস্ত্যানসংশয়প্রমাদালস্যাবিরতিভ্রান্তিদরশনালবধভূ-

মিকত্বানৰস্থিতত্বানি চিত্তবিক্ষেপাস্তেত্তুরাযাঃ .. ৩০..

দুঃখদৌরমনস্যাহমেজযত্বশ্বাসপ্রশ্বাসা বিক্ষেপসহভূবঃ .. ৩১..

তত্প্রতিষেধারথম্ একতত্ত্বভাসঃ .. ৩২..

মৈত্রীকরুণামুদিতোপেক্ষণাং

সুখদুঃখপুণ্যাপুণ্যবিষয়াণাং ভাবনাতশ্চিত্তপ্রসাদনম্ .. ৩৩..

প্রচ্ছরদনবিধারণাভ্যাং বা প্রাণস্য .. ৩৪..

বিষয়বতী বা প্রবৃত্তিরুত্পন্নান্ন মনসঃ স্থিতিনিবন্ধিনী .. ৩৫..

বিশোক বা জ্যোতিষতী .. ৩৬..

বীতরাগবিষয়ং বা চিত্তম্ .. ৩৭..

স্বপ্ননিদ্রাজ্ঞানালম্বনং বা .. ৩৮..

যথাভিমতধ্যানাৎ বা .. ৩৯..

পরমাণু পরমমহত্ত্বান্তোস্য বশীকারঃ .. ৪০..

ক্ষীণবৃত্তেরভিজাতস্যেব মণেরগ্রহীত্‌গ্রহণগ্রাহোষু

তত্‌স্থতদগ্‌নতাসমাপত্তিঃ .. ৪১..

তত্র শব্দারথজ্ঞানবিকল্পৈঃ সংকীরণা সৰিতরকা সমাপত্তিঃ

.. ৪২..

স্মৃতিপরিণুদেধা স্বরূপশুন্যেবারথমাত্রনিরভাসা

নিরিবতরকা .. ৪৩..

এতযৈৰ সৰিচাৰা নিৰিৰচাৰা চ সূক্ষ্মবিষয়া বযাখ্যাতা .. ৪৪..

সূক্ষ্মবিষয়ত্বং চালিঙ্গপৰ্য্যবসানম্ .. ৪৫..

তা এৰ সৰীজঃ সমাধিঃ .. ৪৬..

নিৰিৰচাৰবৈশাৰদেধ্যাত্মপ্রসাদঃ .. ৪৭..

রতংভরা তত্র প্রজ্ঞা .. ৪৮..

শ্রুতানুমানপ্রজ্ঞাত্যম্ অন্যবিষয়া বিশেষাৰথত্বাৎ .. ৪৯..

তজ্জঃ সংস্কারো ন্যসংস্কারপ্রতিবন্ধী .. ৫০..

তস্যাপি নিরোধে সরবনিরোধান্ নিরবীজঃ সমাধিঃ .. ৫১..

ইতি পতঞ্জলিৰিচিতে যোগসূত্রে প্রথমঃ সমাধিপাদঃ .

দ্বিতীয়ঃ সাধনপাদঃ .

তপঃস্বাধ্যায়েশ্বৰপ্রণিধানানি ক্ৰিয়াযোগঃ .. ১..

সমাধিভাৰনারথঃ ক্লেশতনুকরণারথশ্চ .. ২..

অবিদ্যাস্মিতাৰাগদেবঘাভিনিৰেশাঃ ক্লেশাঃ .. ৩..

অবিদ্যা ক্ষেত্রম্ উত্তরেষাং প্রসুপ্ততনুৰিচ্ছিন্নোদাৰাণাম্ .. ৪..

অনিত্যশুচিদুঃখানাশ্চ নিত্যশুচিসুখাত্মখ্যাতিৰবিদ্যা .. ৫..

দৃগদৰশনশক্তে্যারেকাশ্চতেষাস্মিতা .. ৬..

সুখানুশযী রাগঃ .. ৭..

দুঃখানুশযী দেবঘঃ .. ৮..

স্বৰসৰাহী বিদুষোপি তথাকটো ভিনিৰেশঃ .. ৯..

তে প্রতিপ্রসৰহেয়াঃ সূক্ষমাঃ .. ১০..

ধ্যানহেয়াস্তদ্বৃত্তয়ঃ .. ১১..

ক্লেশমূলঃ কৰমাশযো দৃষ্টাদৃষ্টজন্মবেদনীযঃ .. ১২..

সতি মূলে তদ্বিপাকো জাত্যাযুৰেভাগাঃ .. ১৩..

তে হ্লাদপৰিতাপফলাঃ পুণ্যাপুণ্যহেতুত্বাৎ .. ১৪..

পৰিণামতাপসংস্কারদুঃখৈৰগুণবৃত্তিৰিৰোধাচ চ দুঃখম্

এৰ সৰবং বিৰেবিনঃ .. ১৫..

হেয়ং দুঃখম্ অনাগতম্ .. ১৬..

দ্রষ্টৃদৃশ্যযোঃ সংযোগো হেয়হেতুঃ .. ১৭..

প্রকাশক্রিয়াস্থিতিশীলং ভূতেन्द्रিয়াত্মকং ভোগাপৰৱগৱৰং
দৃশ্যম্ .. ১৮..

বিশেষাবিশেষলিঙ্গমাত্রালিঙ্গানি গুণপৰৱৰ্ণি .. ১৯..

দ্রষ্টা দৃশিমাত্রঃ শুদ্ধেধাপি প্রত্যয়ানুপশ্যঃ .. ২০..

তদরথ এৰ দৃশ্যস্যাত্মা .. ২১..

কৃতারং প্রতি নষ্টম্ অপ্যনষ্টং তদন্যসাধারণত্বাৎ .. ২২..

স্বস্বামিশক্ৰেতাঃ স্বৰূপোপলব্ধিহেতুঃ সংযোগঃ .. ২৩..

তস্য হেতুরবিদ্যা .. ২৪..

তদভাৱং সংযোগাভাৱো হানং. তদৃশেঃ কৈবল্যম্ .. ২৫..

বিবেকখ্যাতিরবিপ্লবা হানোপায়ঃ .. ২৬..

তস্য সপ্তধা প্রান্তভূমিঃ প্রজ্ঞা .. ২৭..

যোগাঙ্গানুষ্ঠানাদ্ অশুদ্ধিক্ষয়ে জ্ঞানদীপ্তিরা

বিবেকখ্যাতেঃ .. ২৮..

যমনিযমাসনপ্রাণায়ামপ্রত্যাহারধারণাধ্যানসমাধয়োষ্ঠাৰ

অঙ্গানি .. ২৯..

অহিংসাসত্যাস্তেয়ব্রহ্মচর্যাপরিগ্রহা যমাঃ .. ৩০..

জাতিদেশকালসমযানৰচ্ছিন্নাঃ সারবভৌমা মহাৰৱতম্ .. ৩১..

শৌচসংতোষতপঃস্বাধ্যায়েশ্বৰপ্ৰণিধানানি নিযমাঃ .. ৩২..

বিতৰকবাধনে প্রতিপক্ষভাবনম্ .. ৩৩..

বিতৰকা হিংসাদযঃ কৃতকারিতানুমোদিতা লোভক্রোধমোহপূৰৱকা

মৃদুমধ্যাধিমাত্রো দুঃখাজ্ঞানানন্তফলা ইতি

প্রতিপক্ষভাবনম্ .. ৩৪..

অহিংসাপ্রতিষ্ঠায়াং তত্সন্নিধৌ বৈৰত্যাগঃ .. ৩৫..

সত্যপ্রতিষ্ঠায়াং ক্রিয়াফলাশ্রয়ত্বম্ .. ৩৬..

অস্ত্বেযপ্রতিষ্ঠায়াং সরবরন্থোপস্থানম্ .. ৩৭..
ব্রহ্মচর্যপ্রতিষ্ঠায়াং বীরলাভঃ .. ৩৮..
অপরিগ্রহস্থৈথর্যে জন্মকথংতাসংবোধঃ .. ৩৯..
শৌচাৎ স্ৰাঙ্গজুগুপসা পরৈরসংসরগঃ .. ৪০..
সত্ত্বশুদ্ধিসৌমনসৈকাগ্র্যেন্দ্রিয়জযাত্নদরশনযোগ্যত্বানি
চ .. ৪১..
সংতোষাদ্ অনুত্তমঃ সুখলাভঃ .. ৪২..
কায়েন্দ্রিয়সিদ্ধিরশুদ্ধিক্ষয়াৎ তপসঃ .. ৪৩..
স্বাধ্যায়াদ্ ইষ্টদেবতাসংপ্রয়োগঃ .. ৪৪..
সমাধিসিদ্ধিরীশ্বরপ্রণিধানাৎ .. ৪৫..
স্থিরসুখম্ আসনম্ .. ৪৬..
প্রযত্নশৈথিল্যানন্তসমাপত্তিভ্যাম্ .. ৪৭..
ততো দ্বন্দ্বানভিঘাতঃ .. ৪৮..
তস্মিন্ সতি শ্বাসপ্রশ্বাসযোরগতিবিচ্ছেদঃ প্রাণায়ামঃ .. ৪৯..
বাহ্যভ্যন্তরস্তুষ্ণ্ভৃতিঃ দেশকালসংখ্যাভিঃ
পরিদৃষ্টৌ দীরঘসূক্ষ্মঃ .. ৫০..
বাহ্যভ্যন্তরবিষয়াক্ষেপী চতুরথঃ .. ৫১..
ততঃ ক্ষীয়তে প্রকাশাবরণম্ .. ৫২..
ধারণাসু চ যোগ্যতা মনসঃ .. ৫৩..
স্বস্ববিষয়াসংপ্রয়োগে চিত্তস্য স্বরূপানুকারণ ইবেন্দ্রিয়াণাং
প্রত্যাহারঃ .. ৫৪..
ততঃ পরমা বশ্যতেন্দ্রিয়াণাম্ .. ৫৫..
ইতি পতঞ্জলিবিষ্টিতে যোগসূত্রে দ্বিতীয়ঃ সাধনপাদঃ .
তৃতীয়ঃ বিভূতিপাদঃ .
দেশবন্ধশ্চিত্তস্য ধারণা .. ১..
তত্র প্রত্যয়েকতানতা ধ্যানম্ .. ২..

তদ্ এৰাৰথমাত্ৰনিৰভাসং স্বৰূপশূন্যম্ ইৰ সমাধিঃ .. ৩..

ত্ৰয়ম্ একত্ৰ সংযমঃ .. ৪..

তজ্জযাৎ প্রজ্জালোকঃ .. ৫..

তস্য ভূমিষু বিনিয়োগঃ .. ৬..

ত্ৰয়ম্ অন্তরঙ্গং পূৰেৰভাঃ .. ৭..

তদ্ অপি বহিৰঙ্গং নিৰবীজস্য .. ৮..

ৰযুত্থাননিৰোধসংস্কারযোরভিভৰপ্রাদূৰভাৰৌ
নিৰোধক্ষণচিত্তান্বযৌ নিৰোধপরিণামঃ .. ৯..

তস্য প্রশান্ত্বাহিতা সংস্কারাৎ .. ১০..

সৰৰাৰথতৈকাগ্রতযোঃ ক্ষয়োদযৌ চিত্তস্য সমাধিপরিণামঃ .. ১১..

ততঃ পুনঃ শান্তোদিতৌ তুল্যপ্রতযৌ

চিত্তসৈকাগ্রতাপরিণামঃ .. ১২..

এতেন ভূতেन्द्रियेषু ধৰমলক্ষণাৰস্থাপরিণামা বযাখ্যাতাঃ

.. ১৩..

শান্তোদিতাৰযপদেশ্যধৰমানুপাতী ধৰমী .. ১৪..

ক্ৰমান্যত্বং পরিণামান্যত্বেৰ হেতুঃ .. ১৫..

পরিণামত্ৰয়সংযমাদ্ অতীতানাগতজ্ঞানম্ .. ১৬..

শব্দাৰথপ্রতযানাং ইতরেতরাধ্যাসাৎ সংকরঃ.

তত্ৰপ্রতিভাগসংযমাৎ সৰৰভূতৰুতজ্ঞানম্ .. ১৭..

সংস্কারসাক্ষত্করণাৎ পূৰৰজাতিজ্ঞানম্ .. ১৮..

প্রতযস্য পরচিত্তজ্ঞানম্ .. ১৯..

ন চ তৎ সালম্বনং, তস্যাবিষয়ীভূতত্বাৎ .. ২০..

কাযরূপসংযমাৎ তদগ্রাহশক্তিহস্তন্তে

চক্ষুঃপ্রকাশাসংপ্রয়োগেন্তুরধানম্ .. ২১..

এতেন শব্দাদ্যন্তুরধানমুক্তম্

সোপক্রমং নিরূপক্রমং চ করম্. তত্ৰসংযমাদ্ অপৰান্তজ্ঞানম্,

অরিষ্টৈভ্যো বা .. ২২..
মৈত্র্যাদিষু বলানি .. ২৩..
বলেষু হস্তিবলাদীনি .. ২৪..
প্রবৃত্ত্যালোকন্যাসাৎ সুক্ষ্মমৰযবহিতবিপ্রকৃষ্টজ্ঞানম্ .. ২৫..
ভূবনজ্ঞানং সুরো সংযমাৎ .. ২৬..
চন্দ্রে তারাৰযুহজ্ঞানম্ .. ২৭..
ধূৰে তন্নতিজ্ঞানম্ .. ২৮..
নাভিচক্রে কাযৰযুহজ্ঞানম্ .. ২৯..
কন্ঠকূপে ক্ষুতিপাসানিৰ্ভৃতিঃ .. ৩০..
কুরমনাড্যাং শৈথরাম্ .. ৩১..
মূৰধজ্যোতিষি সিদ্ধদরশনম্ .. ৩২..
প্রাতিভাদ্ বা সরবম্ .. ৩৩..
হৃদযে চিত্তসংৰিৎ .. ৩৪..
সত্ত্বপুরুষযোরতন্তাসংকীরণযোঃ প্রত্যাবিশেষো ভোগঃ
পরারথত্বাৎ স্ব্বারথসংযমাৎ পুরুষজ্ঞানম্ .. ৩৫..
ততঃ প্রাতিভশ্রাৰণবেদনাদরশাস্বাদৰারতা জায়ন্তে .. ৩৬..
তে সমাধাৰ উপসরগা. বযুত্থানে সিদ্ধযঃ .. ৩৭..
বন্ধকারণশৈথিল্যাৎ প্রচারসংবেদনাচ চ চিত্তস্য
পরশরীরাবেশঃ .. ৩৮..
উদানজযাডজলপঙককণটকাদিষ্বসঙ্গ উত্ক্রান্তিশ্চ .. ৩৯..
সমানজযাৎ প্রজ্বলনম্ .. ৪০..
শ্রোত্রাকাশযোঃ সংবন্ধসংযমাদ্ দিবযং শ্রোত্রম্ .. ৪১..
কাযাকাশযোঃ সংবন্ধসংযমাল লঘুতুলসমাপত্তেশ্চাকাশগমনম্ .. ৪২..
বহিরকল্পিতা বৃতিরমহাৰিদেহা. ততঃ প্রকাশাৰরণক্ষযঃ
.. ৪৩..
স্বথুলস্বৰূপসুক্ষ্মমানৰযারথবত্তবসংযমাদ্ভূতজযঃ .. ৪৪..

ততোগিমাদিপ্রাদুরভাৰঃ কাযসংপৎ তদধৰমানভিঘাতশ্চ .. ৪৫..
 ৰূপলাৰণ্যবলৰজ্জ্বসংহননত্ৰানি কাযসংপৎ .. ৪৬..
 গ্রহণস্বৰূপাস্মিতানৰযাৰথৰত্তৰসংযমাদ্ ইন্দ্ৰিয়জয়ঃ .. ৪৭..
 ততো মনোজৰিত্বং বিকরণভাৰঃ প্ৰধানজয়শ্চ .. ৪৮..
 সত্তৰপুৰুষান্যাতাখ্যাতিমাত্ৰস্য সৰৰভাৰাধিষ্ঠাতৃত্বং
 সৰৰত্তাতৃত্বং চ .. ৪৯..
 তদৈৰৱাগ্যাৎপি দোষবীজক্ষয়ে কৈৰল্যম্ .. ৫০..
 স্থান্যুপনিম্নত্ৰেণে সঙ্গস্ময়াকরণং পুনঃ
 অনিষ্টপ্ৰসঙ্গাৎ .. ৫১..
 ক্ষণতত্ৰক্ৰমযোঃ সংযমাদৰিৰেকজং জ্ঞানম্ .. ৫২..
 জাতিলক্ষণদেশৈৰন্যতানৰচ্ছেদাৎ তুল্যযোস্তুতঃ প্ৰতিপত্তিঃ .. ৫৩..
 তারকং সৰৰবিষয়ং সৰৰথাৰিষয়ম্ অক্ৰমং চেতি বিৰেকজং
 জ্ঞানম্ .. ৫৪..
 সত্তৰপুৰুষযোঃ শুদ্ধিসাম্যে কৈৰল্যম্ ইতি .. ৫৫..
 ইতি পতঞ্জলিৰিৰচিত্তে যোগসূত্ৰে তৃতীযো বিভূতিপাদঃ
 চতুৰ্থঃ কৈৰল্যপাদঃ .
 জন্মোঘধিম্নত্ৰেতপঃসমাধিজাঃ সিদ্ধযঃ .. ১..
 জাতান্তৰপরিণামঃ প্ৰকৃত্যাপুৰাৎ .. ২..
 নিমিত্তম্ অপ্ৰযোজকং প্ৰকৃতীনাং বৰণভেদস্তু ততঃ ক্ষেত্ৰিকৰণং .. ৩..
 নিৰমাণচিত্তান্যস্মিতামাত্ৰাৎ .. ৪..
 প্ৰবৃত্তিভেদে প্ৰযোজকং চিত্তম্ একম্ অনেক্ষাম্ .. ৫..
 তত্ৰে ধ্যানজম্ অনাশয়ম্ .. ৬..
 কৰমাশুক্লক্ৰমং যোগিনঃ ত্ৰিবিধম্ ইতৰেষাম্ .. ৭..
 ততস্তদ্বিৰপাকানুগুণানাম্ এৰাভিৰযক্তিৰৰাসনানাম্ .. ৮..
 জাতিদেশকালৰযৰহিতানাম্ অপ্যানন্তৰ্যং,
 স্মৃতিসংস্কাৰযোঃ একৰূপত্বাৎ .. ৯..

তাসাম্ অনাদিত্বং চাশিষো নিত্যত্বাৎ .. ১০..
 হেতুফলাশ্রয়ালম্বনৈঃ সংগৃহীতত্বাদ্ এষাম্ অভাবে তদভাৰঃ
 .. ১১..
 অতীতানাগতং স্বৰূপতোস্ত্যধৰভেদাদ্ ধৰমাণাম্ .. ১২..
 তে বযক্তসূক্ষমা গুণাত্মানঃ .. ১৩..
 পরিণামৈকত্বাদ্ বস্তুতত্ত্বম্ .. ১৪..
 বস্তুসাম্যে চিত্তভেদাৎ তযোরিৰভক্তঃ পন্থাঃ .. ১৫..
 ন চৈকচিত্ততন্ত্রং বস্তু তদ্ অপ্রমাণকং তদা কিং স্যাৎ .. ১৬..
 তদুপরাগাপেক্ষত্বাৎ চিত্তস্য বস্তু জ্ঞাতাজ্ঞাতম্ .. ১৭..
 সদা জ্ঞাতাশ্চিত্তবৃত্তয়স্তত্প্রভোঃ পুরুষস্যাপরিণামিত্বাৎ .. ১৮..
 ন তৎ স্বাভাসংদৃশ্যত্বাৎ .. ১৯..
 একসময়ে চোভয়ানবধারণম্ .. ২০..
 চিত্তান্তরদৃশ্যে বুদ্ধিবুদ্ধেধরতিপ্রসঙ্গঃ স্মৃতিসংকরশ্চ .. ২১..
 চিত্তেরপ্রতিসংক্রমাযাস্তদাকারাপত্তৌ স্ববুদ্ধিসংবেদনম্ .. ২২..
 দৃষ্টদৃশ্যোপরক্তং চিত্তং সরবারথম্ .. ২৩..
 তদসংখ্যেযবাসনাচিত্রম্ অপি পরারথং সংহত্যকারিত্বাৎ
 .. ২৪..
 বিশেষদর্শন আত্মভাবভাবনাৰিনিৰ্বৃত্তিঃ .. ২৫..
 তদা বিবেকনিম্নং কৈবল্যপ্রাপ্তভাৰং চিত্তম্ .. ২৬..
 তচ্ছিত্ত্রেষু প্রত্যয়ান্তরাণি সংস্কারেভাঃ .. ২৭..
 হানম্ এষাং ক্লেষবদুক্তম্ .. ২৮..
 প্রসংখ্যানেপ্যকুসীদস্য সরবথাৰিবেকখ্যাতেৰধৰমমেঘঃ
 সমাধিঃ .. ২৯..
 ততঃ ক্লেষকরমনিৰ্বৃত্তিঃ .. ৩০..
 তদা সরবারণমলাপেতস্য জ্ঞানস্যানন্ত্যাভেত্ত্বয়ম্ অল্পম্ .. ৩১..
 ততঃ কৃত্যৰথানাং পরিণামক্রমপরিসমাপ্তিৰ্গুণানাম্

.. ৩২..

ক্ষণপ্রতিযোগী পরিণামাপরান্তুনিগ্রাহ্যঃ ক্রমঃ .. ৩৩..

পুরুষারথশূন্যানাং গুণানাং প্রতিপ্রসবঃ কৈবল্যং,

স্বরূপপ্রতিষ্ঠা বা চিতিশক্তিরেতি .. ৩৪..

ইতি পাতঞ্জলিবিবরচিত্তে যোগসূত্রে চতুরথঃ কৈবল্যপাদঃ .

.. ইতি পাতঞ্জলযোগসূত্রাণি ..